ijar
ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/22452
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/22452

RESEARCH ARTICLE

जिंदगी 50 - 50 ’ उपन्यास में अधूरी देह की पूरी कहानी

पी .एम.भुमरे

1. सहयोगी प्राध्यापक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष ,श्री मधुकरराव बापूराव पाटील खतगांवकर महाविद्यालय,शंकरनगर ,तह- बिलोली, जि.- नांदेड.

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 12 October 2025
Final Accepted: 14 November 2025
Published: December 2025

Key words:-
अधूरी देह की पूरी कहानी ,किन्नर समुदाय का सामाजिक यथार्थ,सामाजिक तिरस्कार ,घर से पलायन और शोषण,दोगली मानसिकता ।

Abstract

जिंदगी 50-50 उपन्यास में किन्नरों की त्रासदी का चित्रण उपरोक्त मुद्दों के आधार पर किया गया है जो कि, समाज की उस कठोर सच्चाई को सामने लाता है । जहां लैंगिक पहचान के कारण इंसान को इंसान नहीं समझा जाता। किन्नरों का जो बहिष्कार किया जाता है बचपन से ही परिवार, स्कूल और समाज से उन्हें अलग कर दिया जाता है । और इसी अलग मानसिक विकृति का प्रभाव उनकी स्थिति पर भी होता है । उपन्यास में किन्नर अपनी लैंगिक पहचान को लेकर लगातार संघर्ष करते हैं साथ ही उन्हें रोजगार के सम्मानजनक अवसर न मिलने के कारण बधाई मांगने या भीख जैसे कामों तक सीमित कर दिया गया है । परिवार और अपनापन उन्हें मिल नहीं पाता साथ ही उपन्यास यह दिखाता है कि, किन्नर भी सामान्य इंसानों की तरह इज्जत , सुरक्षा और प्यार चाहते हैं । लेकिन समाज उन्हें यह अधिकार देने से कतराता है ।जिंदगी 50-50 में किन्नरों की त्रासदी केवल उनकी व्यक्तिगत पीड़ा नहीं है बल्कि समाज की असंवेदनशील सोच की आलोचना है । लेखक सभी को सोचने पर मजबूर करते हैं की बराबरी और मानवीय व्यवहार सिर्फ नारा नहीं बल्कि जिम्मेदारी होनी चाहिए ।

"© 2025 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Introduction:-

साहित्य समाज का दर्पण होता है । उसमें वह आवाज़ भी स्थान पाती है जिन्हें लंबे समय तक अनुसूना किया गया ।किन्नर समुदाय की साहित्य में अभिव्यक्ति इसी बदलाव का महत्वपूर्ण उदाहरण है। आधुनिक साहित्य में किन्नरों के जीवन संघर्ष, पहचान और मानवीय सभ्यताओं को अधिक संवेदनशीलता और यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया जाने लगा है ।प्राचीन साहित्य और लोक कथाओं में किन्नर पात्र अक्सर प्रतीकात्मक या हास्यत्मक रूप में दिखाई देते थे ।उन्हें या तो देवी शक्ति से जोड़ा गया या समाज से अलग-अलग रहस्य के रूप में दिखाया गया ।आधुनिक साहित्य ने इस दृष्टि को चुनौती दी और किन्नर समुदाय को एक जीवंत संघर्षशील और संवेदनशील मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किया है। हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श एक अपेक्षाकृत नया लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक, साहित्यिक विमर्श है। यह विमर्श उस समुदाय की पहचान, संघर्ष अधिकार और मानवीय संवेदनाओं को सामने लाता है ।जिसे लंबे समय तक समाज और साहित्य दोनों में हाशिए पर रखा गया है। स्वतंत्रता के बाद विशेष रूप

Corresponding Author:- पी .एम.भुमरे
Address:-सहयोगी प्राध्यापक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष ,श्री मधुकरराव बापूराव पाटील खतगांवकर महाविद्यालय,शंकरनगर ,तह- बिलोली, जि.- नांदेड.

से 21वीं सदी में हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श सशक्त रूप में उभरा है। इस दौर में लेखकों ने किन्नर को मानव रूप में उनकी पीड़ा और संघर्ष के साथ प्रस्तुत किया है। किन्नरों की आत्मकथा इस विमर्श की सबसे सशक्त कड़ी है। जिसमें 'मैं हिजड़ा मै लक्ष्मी - नारायण त्रिपाठी , अर्धनारीश्वर - रेवती अम्मा की रचनाएं लोकप्रिय हुई। हिंदी के कथा साहित्य में भी कई कहानियों और उपन्यासों में किन्नर पात्र केंद्र में आए हैं जिसमें पारिवारिक बहिष्कार ,आजीविका की समस्या, प्रेम और रिश्तों की जटिलता आदि मुद्दे उठाए गए हैं। आधुनिक कवियों और नाटककारों ने किन्नर जीवन को प्रतीक और यथार्थ दोनों रूपों में प्रस्तुत किया है। कविता में उनकी पीड़ा और आकांक्षाओं को संवेदनात्मक रूप में व्यक्त किया है। इसी श्रृंखला में जिंदगी 50-50 भगवंत अनमोल द्वारा लिखित उपन्यास किन्नर समुदाय के सामाजिक यथार्थ, संघर्ष और अस्मिता की खोज को केंद्र में रखता है। यह रचना किन्नरों के जीवन को केवल सहानुभूति के स्तर पर नहीं बल्कि यथार्थवादी और मानवीय दृष्टि से प्रस्तुत करती है।

अधूरी देह की पूरी कहानी :-

जिंदगी 50-50 इस उपन्यास के रचनाकार भगवंत अनमोल है। इस उपन्यास का प्रकाशन 2017 में हुआ। इस उपन्यास का केंद्रीय पात्र हर्षा उर्फ हर्षिता है साथ ही उपन्यास में कई और भी पात्र है। यह उपन्यास किन्नर समाज के भीतर की दुनिया उनके संघर्ष ,संवेदनाओं और आम जन जीवन से जुड़ी उनकी समस्याओं को गहराई से उजागर करता है । यह समाज के दोहरे मानदंड के ऊपर सवाल भी उठाता है ।इस उपन्यास का केंद्रीय पात्र हर्षा है जिसका जन्म तो एक लड़के के रूप में हुआ था लेकिन उसकी मनोदशा और पहचान एक स्त्री की है। यह उपन्यास हर्षा के हर्षिता बनने तक के सफर,पहचान के संकट समाज द्वारा दिए गए तिरस्कार और उसके आंतरिक द्वंद्व को बहुत मार्मिकता से प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास किन्नर विमर्श को एक नई दिशा देता है और पाठकों को इस समुदाय के प्रति अधिक संवेदनशील बनाने का प्रयास भी करता है। इसमें उनके जीवन की वास्तविक चुनौतियों और भावनाओं का सजीव चित्रण मिलता है। जिंदगी 50-50 इस उपन्यास में कई सारे बिंदु उभरते हैं वे निम्नलिखित है।

पहचान का संकट और आंतरिक द्वंद का बचपन:-

हर्षा का जैसे ही परिवार में जन्म होता है वैसे ही उसके माता-पिता बहुत खुश होते हैं ।खुश होने के बाद बच्चों के जन्म के दिन पर माता-पिता धूमधाम से मिठाई बांटते हैं ।परंतु यह खुशी अधिक दिनों तक नहीं रहती। बल्कि हर्षा जैसे-जैसे बड़ा होता है वैसे-वैसे उसके हाव-भाव में अलग प्रकार का बदलाव दिखाई देता है। वे सामान्य हावभाव नहीं होते। हर्षिता को बचपन में अकेले रहने तथा दूसरों से अलगाव की भावना महसूस होती है। इस उपन्यास में ऐसे कई घटनाएं आई है जहां खुद हर्षा सवाल करता है कि, वह कौन है ? उसकी पहचान क्या है ?जब वह लड़कों के खेल में शामिल नहीं हो पाता या लड़कियों की तरह व्यवहार करता है तो उसके भीतर का द्वंद्व उभरता है। लेखक हर्षा के मानसिक स्थिति का वर्णन करते हैं। जहां हर्षा को लगता है कि, शरीर एक पिंजरा है और आत्मा किसी और की या भगवान ने उसे आधा अधूरा बनाया है। वह अक्सर आईने में खुद को देखकर यह स्वीकार नहीं कर पाता कि,वह लड़का है ।इसी प्रकार के द्वंद्वों में उसका बचपन बीत जाता है ।जब माता-पिता हर्षा के अलग बर्ताव, हाव-भाव को देखते हैं तब से वे उसे कोंसते रहते हैं। हर्षिता को जैसे ही पता चलता है कि, उनके पिता की तबीयत खराब है और उनकी बीमारी का कारण उनकी पुश्तैनी जमीन है जो उनसे छीनने वाली थी। उस जमीन को वापस पाने के लिए उन्हें पचास रुपए की जरूरत थी। इस कार्य के लिए बाबुजी उनके बेटे अनमोल से मदद की अपेक्षा करते हैं लेकिन अनमोल अपनी प्राथमिक जरूरतों को अधिक महत्व देता है । हर्षिता को बाबूजी की जमीन या गांव के प्रति कोई लगाव नहीं था। उसका यह लगाव बाबूजी के प्रति था। उनका बेटा अनमोल अपनी व्यवस्थाओं का हवाला देते हुए बाबूजी से कहते हैं कि, फिलहाल उसके लिए उसके पास पैसों की इतनी व्यवस्था नहीं है ।अर्थात अनमोल अपने बाबूजी को कोई भी सहायता न करते हुए देखकर हर्षिता बहुत दुखी होती है। जीवन में जिस पिता से हमेशा नफरत, मारपीट और अपमान मिला हो फिर भी हर्षिता अपने पिता

के दर्द से दुखी होती है और अपना कर्तव्य भी निभाती है। भले ही हर्षिता एक किन्नर है फिर भी अपने माता-पिता के प्रति जिम्मेदारी निभाना चाहती है । यह भी सच है कि, हर्षिता के पास भी पैसे नहीं थे फिर भी हर्षिता अपने पिताजी को सहायता करने का वचन देती है। हर्षिता के कारण उनके बाबूजी को जितना अपमान, बेईज्जती सहन करनी पड़ी है उसे चुकाने की भरपूर प्रयास करती है। पैसे जुटाने के चक्कर में हर्षिता अपनी तबीयत की चिंता नहीं करती।

सामाजिक तिरस्कार और मजाक स्कूल और समाज में:-
समाज की क्षुद्र मनोदशा को दर्शाने वाले कई प्रसंग इस उपन्यास में आए हैं। हर्षा जैसे बड़ा होता है वह खेल के मैदान में या गांव के मैदानों में पहले तो खेलने के लिए जाता था परंतु जैसे-जैसे वह बड़ा हो जाता है वैसे-वैसे अन्य लड़कों से कटाव,अकेलापन महसूस करता है। स्कूल के मैदान में जैसे ही वह बच्चों के साथ खेलने के लिए जाता है तो सब बच्चे उसे छक्का या हिजड़ा कहकर चिढ़ाते हैं । क्योंकि हर्षा के हाव-भाव ही अन्य बच्चों से भिन्न होते हैं ।इसी कारण उसकी पहचान अलग सी बनती है। इतना नहीं घर, परिवार के सदस्यों द्वारा तथा माता-पिता के ताने में भी उसे एक मर्द बनने की सलाह दी जाती है ।उपन्यास में अनेक प्रसंगों में हर्षा के पिता उसे जबरदस्ती लड़कों वाले काम करने को कहते हैं लेकिन वह उन कामों को निश्चित रूप से नहीं कर पाता। यह सभी घटनाएं हर्षा को एहसास कराती है कि, इस समाज में उसके लिए कोई स्थान नहीं है। जब वह अत्यधिक परिश्रम करती है तब हर्षिता परिश्रम और चिंता से रोग ग्रसित होती है ।उसका अपना तो कोई था नही । सारी समस्याओं से निजात पाने का एक ही रास्ता था। अपने जीवन को समाप्त करना। हर्षिता बाप के प्रति एक बेटे का कर्तव्य निभाती है और अपनी जिंदगी बर्बाद कर देती है । देह व्यापार द्वारा हर्षिता अपने पिता के मुख की मुस्कान को वापस लाना चाहती है परंतु पिता के मुस्कान भरे चेहरे को देख नहीं पाती। देह व्यापार का जो गलत रास्ता उसने अपनाया था उसकी सजा उसे गंभीर बीमारी के रूप में मिलती है । हर्षा जब से हर्षिता बन गई है तब से वह अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाती है साथ ही वह एक स्वाभिमानी स्त्री के रूप में काम करती है । उसे अपने मेहनत पर विश्वास है ।जब-जब समाज के किसी भी व्यक्ति ने हर्षा को स्त्री का एहसास कराया है तब - तब हर्षिता में स्वाभिमान,समर्पण का भाव जागृत हुआ है। किन्नरों को जन्म लेने में वास्तविक उस किन्नर का कोई दोष नहीं होता फिर भी पूरा दोष उसके ही माथे पर लगाया जाता है। हर कोई पुरुष या महिला हर वक्त यह एहसास दिलाते रहते हैं की हर्षिता तुम अलग हो। रही सही कसर उसके बाबूजी भी अपनी भड़ास निकाल कर पूरी कर लेते हैं। तब हर्षिता यह सोचती है कि, इस सभ्य समाज ने मुझ जैसे अलग व्यक्ति को जन्म क्यों दिया है? आखिर उसकी गलती ना होने के बावजूद भी उस पर गलतियां थोपी जाती है। इस पर हर्षिता कहती है कि, "अब मुझे समझ में आ रहा था की, कस्तूरी जैसे लोग समाज से बाहर अपने समुदाय में क्यों रहते हैं? मैंने भी ठान लिया कब तक इस समाज में मर - मर के जीती रहूंगी । भले ही अलग रहो लेकिन पल-पल मरती हुई जीना मुझे मंजूर नहीं।"1 इस प्रकार हम देखते हैं कि, पढ़े लिखे किन्नरों में आज स्वाभिमान की भावना जागृत हो रही है और वह अपना घर और परिवार जहां पर उन्हें उचित मान - सम्मान नहीं मिल रहा है ऐसी स्थिति में घर, परिवार का त्याग करने में संकोच नहीं कर रही है।

घर से पलायन और शोषण - हर्षा गांव और परिवार से तंग आकर सुरक्षित जगह पर जाना चाहता है।क्योंकि गांव तथा अपने दोस्तों, परिवार के साथ जीना मुश्किल हो जाता है। गांव में सब बच्चे उसे चिढ़ाते हैं। इतना ही नहीं स्कूल के अध्यापक भी उसे चिढ़ाते रहते हैं। हर्षा अपने माता-पिता, दोस्तों की बदनामी न हो इस डर से शहर में भाग जाता है । किन्नरों के अड्डे पर पहुंचकर किन्नरों के साथ रहने लगता है ।गांव से कुछ पैसे भी लेकर आता है परंतु जैसे ही शहर में पहुंच जाने पर पैसे खत्म हो जाते हैं। तब पेट भरने के लिए और सिर छुपाने के लिए, उसे अपनी इज्जत गंवानी पड़ती है। इस उपन्यास में आपराधिक लोगों का चित्रण भी है जो हर्षा के अकेलेपन और मजबूरी का फायदा उठाकर उस पर शारीरिक अत्याचार करते हैं। इस पर हर्षा महसूस करती है

कि, समाज , लोग भी उसे इंसान नहीं बल्कि एक वस्तु समझते हैं ।अर्थात हर्षा गांव से शहर जाता है तो उसका हर्षिता के रूप में नामकरण हो जाता है । किन्नरों की गुरु मां राधिका उसे कम पैसे देकर उससे ज्यादा काम लेती है । काम की तुलना करती थी साथ ही अन्य किन्नरों की तरह उसे भी किसी भी प्रकार की सुविधा नहीं दी जाती थी। अर्थात किन्नर परिवार में रहे या किन्नरों की बस्ती में जाकर रहे कहीं पर भी उन्हें भौतिक सुविधाओं से वंचित रखा जाता है ।जैसे, "खाना भी सबसे बाद में दिया जाता था। यहां तक की सबके लिए तखत था पर मुझे जमीन पर सोने की जगह दी गई। हर जगह पर मेरी तौहीन होने लगी।" 2 हर्षा के जन्म के साथ ही उसके साथ परायापन महसूस किया जाता रहा है । लोगों से वह अपेक्षा भी कैसे करेगी ?हर्षिता के लिए उनके पिता द्वारा मिला अपमान यह बहुत कम था, ऐसे माहौल में धीरे-धीरे हर्षिता ने स्वयं को ढाल लिया था । जब वह मुंबई में रहती थी उसे अपने भाई की खोज खबर हमेशा रहती थी । परिवार से बिछड़कर भी अपने परिवार की चिंता उन्हें सताती थी । अपने परिवार के सुख-दुख में वह सहभागी होना चाहती थी। समय-समय पर सहायता करना चाहती थी।

किन्नर समुदाय में स्वीकृत हर्षिता बना हर्षा जब अपने परिवार से गांव छोड़कर शहर चला जाता है तो किन्नरों की बस्ती में शामिल हो जाता है ।वहां से उसके जीवन में कई सारे मोड़ आते हैं ।जहां उसे पहली बार अपनेपन का एहसास होता है। जब वह गुरु मां के पास पहुंचती है तो वहां उसे पहली बार सुरक्षा का अनुभव महसूस होता है। समुदाय के लोग उसे वैसे ही स्वीकार करते हैं जैसा वह है ।उपन्यास में हर्षिता नाम दिए जाने का प्रसंग भावनात्मक है जहां उसे लगता है कि, अब उसकी एक पहचान है भले ही वह मुख्य धारा से अलग हो जाए। आज भी यह सच्चाई हम झूठला नहीं सकते, किन्नर लोग समाज में आज भी बहिष्कृत है । इनकी एक दुनिया, उनके लोग और उनके समाज में ही किन्नरों को रहने के लिए मजबूर किया जाता रहा है। आज हम कितना भी किन्नरों के प्रति हमदर्दी दिखाएं तो भी यह दुनिया मतलबी है । भाईचारा केवल कागजों पर है। सिर्फ दिखाने के लिए है। किन्नरों में आज भी मानवता की मिसाल है । जैसे कि, एक दूसरे का ख्याल रखना, दूसरे के लिए जीने का जज्बा इनमें पाया जाता है। यह समाज संगठन अपने हितों की रक्षा के लिए काम करता है । किन्नर समाज में सामाजिक समरता का सुंदर उदाहरण मिलता है। समाज में आज जहा पर सांप्रदायिकता और धार्मिकता साथ ही संकीर्णता जैसी सोच फैली हुई है। ऐसे माहौल में किन्नर समाज आज भी सामाजिक एकात्मता के लिए पहचाना जाता है। जैसे , "सामाजिक समरसता की बात की जाये तो हिजडो के डेरे से बडा शायद ही कोई उदाहरण मिले, कोई हिंदू के घर जन्मा तो कोई मुस्लिम के, तो कोई किसी पंडित दलित या अन्य के। पर किसी मे कोई भेदभाव नही है।"3 इसी कारण किन्नरों की अलग सी दुनिया बनी हुई है। और वे लोग संगठित होकर अपने बस्ती में रहते हैं। इस संदर्भ में हर्षा और कस्तूरी के संवाद से यह स्पष्ट होता है कि, " सुख है। यहां हमारा गैंग है, किसी के मजाल नहीं है कोनो कुछ कहा जाये। अगर तुम्हें कभहूं लागे, वहां तुम चैन से नहीं जी पा रहे हो तो हम तुम्हारी बहनें ही है। यह घर हमेशा तुम्हारे लिए खुला है। हम तुम्हें वैसे ही रखेंगे जैसे ये सब लोग रहते हैं ।"4 समाज में, परिवार में किन्नरों को सम्मानजनक स्थान मिला तो किसी भी किन्नर को घर छोड़ने की जरूरत नहीं पड़ती। परंतु यह सच्चाई भी है कि, किन्नरों को समाज तथा परिवार में मान- सम्मान नहीं मिलता बल्कि उनका शोषण होता रहा है । उन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखा जाता है। मजबूर होकर कई किन्नरों को अपने घर, परिवार से हाथ धोना पड़ता है। अपने माता-पिता तथा परिवार पर किसी भी प्रकार की भर्सना ना हो इसलिए हर्षा से हर्षिता बनकर अपने परिवार और बाबूजी की इज्जत की खातिर अपने गांव से दूर मुंबई चली जाती है और किन्नरों के जीवन का सच उसे मालूम होता है। किन्नरों की बस्ती में जाकर किन्नरों के जीवन का पर्दाफाश वह करती है। गांव से परिवार छोड़ जाने के बाद भी हर्षिता के जीवन की समस्याएं समाप्त नहीं हुई थी। यह आज के समाज तथा सरकार के लिए भी चिंतनीय विषय है।

हर्षिता का अधिकारों के लिए संघर्ष:-

उपन्यास के उत्तरार्ध में हर्षिता का संघर्षशील चेहरा सामने आता है। हर्षिता शिक्षित होने का निर्णय लेती है और समुदाय के अन्य लोगों को पढ़ाने का कार्य करती हैं। इससे यह भी दर्शाता है कि, वह सिर्फ पीड़ित नहीं बल्कि जागरूक बन गई है। चुनावी पहचान पत्र या आधार कार्ड बनवाने जैसी घटनाएं जहां सरकारी दफ्तरों में उन्हें उपेक्षा का सामना करना पड़ता है ।लेकिन हर्षिता अपने नागरिक अधिकारों के लिए लड़ती है। हर्षिता स्वयं के बलबूते पर जीवन की यात्रा को यथार्थवादी और भावनात्मक रूप से शक्तिशाली बनाती हैं। अपना कर्तव्य निभाकर जीवन का त्याग भी करती है। लिए और सोचती है कि, स्त्री - पुरुष समाज के बारे में उसकी दोगली मानसिकता और उसके रवैया के बारे में जो एक अधूरे व्यक्ति के जीने का हक छीन लेता है। उसके मन में कई सारे प्रश्न उत्पन्न होते हैं । जैसे, "किन्नर होना इतना बड़ा अभिशाप क्यों है? बस मेरा अधूरापन ही तो है न? कैसे-कैसे पल आए। इस शरीर में सब भुगता, सब सहा। जिस शरीर का लोग मजाक उड़ाते हैं, उसे ही रात को अपने मन बहलाने का जरिया बना लेते हैं। मेरे शारीरिक अस्तित्व में दुहरापन है ।लेकिन उस तथाकथित समाज के व्यक्तित्व के दोहरेपन पर मैं थूकती हूँ।"[5] इस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था में जो कोई संकटों का सामना करता है , दुखों से निजात पाना चाहता है और मेहनत करते हुए उससे निजात पाना चाहता है तब समाज उसका साथ नहीं देता है। अंततः इस उपन्यास में हर्षिता भरसक कोशिश करती है जीने की, अपने परिवार को मजबूत बनाने के लिए भी काम करती है। परंतु अकेला व्यक्ति सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ लड़ नहीं सकता । अकेले हर्षिता की शक्ति कमजोर पड़ जाती है और अंततः हर्षिता सामाजिक व्यवस्था के बदलाव की लडाई हार जाती है । जिसका परिणाम आत्महत्या कर अपना जीवन समाप्त कर देती है। उसके जीवन का दुखद अंत होता है।

निष्कर्ष :-

किन्नर समुदाय की साहित्य में अभिव्यक्ति केवल एक वर्ग की कहानी नहीं है बल्कि मानवता, समानता और संवेदना की कहानी है। यह साहित्य समाज की रूढियो को तोड़ता है और एक अधिक समावेशी न्यायपूर्ण सोच की और ले जाता है ।इस प्रकार किन्नर साहित्य न केवल हंसी की आवाज है बल्कि समकालीन साहित्य की एक सशक्त और आवश्यक धारा भी है ।जिंदगी 50-50 उपन्यास किन्नरों के जीवन को संघर्ष, पीड़ा और आशा तीनों आयामों में प्रस्तुत करता है ।यह पाठक को सोचने पर मजबूर करता है कि, किन्नर कोई अलग प्राणी नहीं बल्कि समाज के ही वे सदस्य हैं जिन्हें सम्मानपूर्वक जीवन जीने का समान अधिकार है।

संदर्भ सूची:-

1.भगवंत अनमोल- जिंदगी 50-50 प्रकाशन वर्ष - 2008 ,राजपाल एंड सन प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 99
2.भगवंत अनमोल- जिंदगी 50-50 प्रकाशन वर्ष - 2008 ,राजपाल एंड सन प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 110
3. सं. डॉ.एम. फिरोज खान - थर्ड जेंडर : हिंदी कहानियाँ, ,अनुसंधान पब्लिशर्स,कानपूर- पृष्ठ- 127
4.भगवंत अनमोल- जिंदगी 50-50 प्रकाशन वर्ष - 2008 ,राजपाल एंड सन प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 119
5.भगवंत अनमोल- जिंदगी 50-50 प्रकाशन वर्ष - 2008 ,राजपाल एंड सन प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 139